८. जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार ...!

– प्रा. संतोष मडकी

लेखनीय

किसी सफल साहित्यकार का साक्षात्कार लेने हेतु चर्चा करते हुए प्रश्नावली तैयार कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● साहित्यकार से मिलने का समय और अनुमति लेने के लिए कहें । ● उनके बारे में जानकारी एकत्रित करने के लिए प्रेरित करें । ● साक्षात्कार संबंधी सामग्री उपलब्ध कराएँ । ● विद्यार्थियों से प्रश्न निर्मिति करवाएँ ।

रुला तो देती है हमेशा हार,
पर अंदर से बुलंद बनाती है हार ।
किनारों से पहले मिले मझधार
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

फूलों के रास्तों को मत अपनाओ ,
और वृक्षों की छाया से रहो परे ।
रास्ते काँटों के बनाएँगे निडर
और तपती धूप ही लाएगी निखार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

सरल राह तो कोई भी चले,
दिखाओ पर्वत को करके पार ।
आएगी हौसलों में ऐसी ताकत,
सहोगे तकदीर का हर प्रहार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

परिचय

जन्म : २५ दिसंबर १९७६ सोलापुर (महाराष्ट्र)

परिचय : श्री मडकी इंजीनियरिंग कॉलेज में सहप्राध्यापक हैं । आपको हिंदी, मराठी भाषा से बहुत लगाव है ।

रचनाएँ : गीत और कविताएँ, शोध निबंध आदि ।

पद्य संबंधी

नवगीत : प्रस्तुत कविता में कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि जीवन में हार एवं असफलता से घबराना नहीं चाहिए। जीवन में हार से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए ।

❊ उजालों की आस तो जायज है,
पर अँधेरों को अपनाओ तो एक बार ।
बिन पानी के बंजर जमीन पे,
बरसाओ मेहनत की बूँदों की फुहार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

जीत का आनंद भी तभी होगा,
जब हार की पीड़ा सही हो अपार ।
आँसू के बाद बिखरती मुस्कान,
और पतझड़ के बाद मजा देती है बहार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... ! ❊

आभार प्रकट करो हर हार का,
जिसने जीवन को दिया सँवार ।
हर बार कुछ सिखाकर ही गई,
सबसे बड़ी गुरु है हार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

❊ पद्यांश पर आधारित कृतियाँ

(१) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :-
(क) कवि ने इसे पार करने के लिए कहा है- नदी/पर्वत/सागर
(ख) कवि ने इसे अपनाने के लिए कहा है-अँधेरा/उजाला/सबेरा

(२) लय-संगीत निर्माण करने वाली दो शब्दजोड़ियाँ लिखिए ।

(३) 'जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

शब्द संसार

बुलंद (वि.फा.) = ऊँचा, उच्च
मझधार (स्त्री.) = धारा के बीच में, मध्यभाग में
हौसला (पुं.) = उत्कंठा, उत्साह
बंजर (पुं. वि) = ऊसर, अनुपजाऊ
फुहार (स्त्री.सं.) = हलकी बौछार/वर्षा

कल्पना पल्लवन

'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' इस विषय पर भाषाई सौंदर्यवाले वाक्यों, सुवचन, दोहे आदि का उपयोग करके निबंध/कहानी लिखिए ।

श्रवणीय

यू ट्यूब से मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'नर हो न निराश करो मन को' सुनिए और उसका आशय अपने शब्दों में लिखिए ।

पठनीय

रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'गेंहूँ बनाम गुलाब' निबंध पढ़िए और उसका आकलन कीजिए ।

संभाषणीय

पाठ्येतर किसी कविता की उचित आरोह-अवरोह के साथ भावपूर्ण प्रस्तुति कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) 'हर बार कुछ सिखाकर ही गई, सबसे बड़ी गुरु है हार'इस पंक्ति द्वारा आपने जाना .....

(२) कविता के दूसरे चरण का भावार्थ लिखिए ।

(३) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :-

(क) फूलों के रास्ते

(ख) जीत का आनंद मिलेगा

(ग) बहार

(घ) गुरु

(४) संजाल पूर्ण कीजिए :

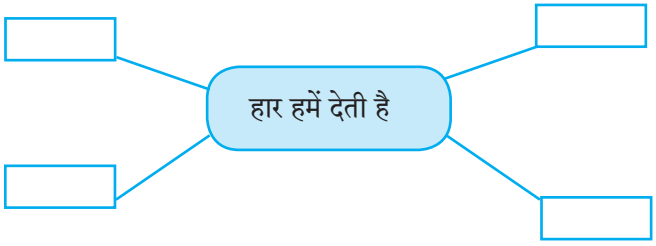

(५) उचित जोड़ मिलाइए :-

अ		आ
i) इन्हें अपनाना नहीं	-	तकदीर का प्रहार
ii) इन्हें पार करना	-	वृक्षों की छाया
iii) इन्हें सहना	-	तपती धूप
iv) इससे परे रहना	-	पर्वत
	-	फूलों के रास्ते

(६)आकृति पूर्ण कीजिए :

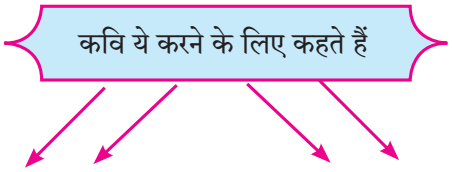

भाषा बिंदु

निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए :- शुद्ध-वाक्य

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
१. वृक्षों का छाया से रहे परे ।	१. _____
२. पतझड़ के बाद मजा देता है बहार ।	२. _____
३. फूल के रास्ते को मत अपनाओ ।	३. _____
४. किनारों से पहले मिला मझधार ।	४. _____
५. बरसाओं मेहनत का बूँदों का फुहार ।	५. _____
६. जिसने जीवन का दिया सँवार ।	६. _____

रचना बोध

.....

.....

.....